संस्थान का मार्ग दर्शक सूत्र

योऽसावसौ पुरूषः सोऽहमस्मि

वह जो ब्रह्माण्डीय आत्मा है वही मैं हूं ।

(ईषावास्योपनिषद्)

यदि हम अपने आप को ब्रह्माण्ड से, अपने पर्यावरण से या दूसरों से अलग समझेंगे, तो कभी शान्ति से नहीं रह पाएंगे और इस कारण से हम अपने आप को अपने समाज की, अपने राष्ट्र की, मानवता की और अपने आमयाविनों की सेवा में पूर्ण रूप से समर्पित नहीं कर पाएंगे । इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे संस्थान का उद्देश्य ऐसे चिकित्सक तैयार करना है जिन्हें इस परम सत्य का बोध हो कि मैं भी अन्य सब मनुष्यों और जीव–जन्तुओं की तरह ब्रह्माण्ड की ही आत्मा हूं और इसीलिए मैं जब अपने रोगियों की सुश्रुषा में रत हूं या उनकी सुश्रुषा करने के लिए अध्ययन में रत हूं तो मैं किसी दूसरे की नहीं वरन् अपनी ही सेवा कर रहा हूं ।